8

पं. मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक चिंतन एवं उसकी उपादेयता

त्रिभुवन मिश्रा*

पं. मदन मोहन मालवीय महान देशभक्त, दार्शनिक, शिक्षाविद्, प्रभावशाली समाज सुधारक, जुझारू पत्रकार, विदग्ध विधिवेत्ता, प्रखर सांसद, राजभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक तथा मोहक जन-नेतृत्व आदि गुणों से मंडित देश के अग्रणी नेताओं में रहे हैं। मदन मोहन मालवीय आधुनिक विश्व में एक महान शिक्षा शास्त्री के रूप में स्थापित हैं क्योंकि उन्होंने तत्कालीन समाज की वस्तु स्थिति पर विस्तारपूर्वक विचार किया, आवश्यकताओं को पहचाना, शिक्षा सिद्धांतों का पुनः विश्लेषण किया एवं उनको सामयिक संदर्भ में नवीन रूप प्रदान किया। अतः मानव प्रकृति की मूल संकल्पना को पहचानकर उसे व्यावहारिक रूप दिया। उनके कार्य 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' के रूप में प्रकट हुए। यहाँ के परिवेश में कक्षा-कक्ष परिस्थितियों, शिक्षक-शिक्षार्थी व्यक्तित्व में, भिन्न-भिन्न विषयों के द्वारा समाज में उनके मौलिक विचार प्रकट हुए एवं आज भी प्रवाहमान हैं अतः निःसंदेह मदन मोहन मालवीय एक महान शिक्षाशास्त्री हैं।

पं. मदन मोहन मालवीय कर्मण और विनयशील थे। देश की शिक्षा व्यवस्था में उनका योगदान अत्यंत सराहनीय है।

मदन मोहन मालवीय का जन्म इलाहाबाद के एक ब्राह्मण परिवार में 25 दिसंबर 1861 को हुआ था वे एक महान राजनेता और शिक्षाविद थे। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

जीवन के विविध क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान देने वाले देश के इस महान सपूत का देहांत 12 नवंबर 1946 को हुआ। पं. मदन मोहन की मृत्यु पर गाँधी ने कहा था "पं. मालवीय जी की मृत्यु से भारत ने अपना सबसे वरिष्ठ तथा एक योग्यतम एवं अप्रतिम सेवक खो दिया है। अंतिम समय तक वह भारत तथा इसकी स्वतंत्रता के बारे में सोचते रहे।" (मालवीय, 2012)

जवाहर लाल नेहरु ने मदन मोहन मालवीय को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि "...वे उन महान लोगों में से एक थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की नींव रखी और इस पर एक-एक ईंट तथा एक-एक पत्थर रखकर भारतीय स्वतंत्रता का भवन खड़ा किया। वे न केवल भारतीय राष्ट्रवाद के महान जनक थे बल्कि यवाओं के प्रेरण स्रोत रहे, जिनके नेतृत्व में हमने जनसेवा के बारे में बहुत कुछ सीखा। यह एक

* *शोध छात्र*, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221010

बहुत बड़ा झटका है। वे मात्र ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो केवल सभाओं में काम करना या बोलना जानते थे, बल्कि दुनिया जानती है कि उन्होंने अपने पीछे ढेरों उपलब्धियाँ छोड़ी हैं...।" (मालवीय, 2012)

मदन मोहन मालवीय की दृष्टि में शिक्षा

पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा की शक्ति में अटूट श्रद्धा रखते थे। अतः व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा को मूल आधार मानते थे। उनका कथन था "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक और बालिका निरक्षर न रहे।"

(पाण्डेय, 2012)

जीवन का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र हो, शिक्षा की ऐसी व्यवस्था हो कि विद्यार्थी अपनी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक शक्तियों का विकास कर आगे चलकर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सके, कलापूर्ण सौंदर्यमय जीवन जी सके, समाज में आदरणीय और विश्वास पात्र बन सके तथा देशभक्ति, जो मनुष्य को उच्च कोटि की सेवा करने के लिए प्रेरित करती है। पं. मदन मोहन ऐसी ही सर्वांगीण शिक्षा के पक्षधर थे जो मानव को संपूर्ण मानव बनाए। मानवीय गुणों का निर्माण और आध्यात्मिक अनुशासन पं. मदन मोहन मालवीय की शिक्षा अवधारणा के आधारभूत सिद्धांत थे। उनका उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं रचनात्मक प्रवृतियों को प्रोत्साहन देना था, ताकि वे सही अर्थों में अनुशासित व उत्तरदायी नागरिक बनकर देश के विकास में सार्थक भूमिका निभा सकें। मदन मोहन मालवीय का कहना था कि शिक्षा अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए है—

अन्त्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमों, य उ विद्यायारतः।।

(अल्तेकर, 2014)

अर्थात् जो केवल भौतिक विज्ञान की ओर जा रहे हैं वे अंधकार में गिरेंगे, इससे भी ज़्यादा अंधकार में वे गिरेंगे, जो प्रकृति की शिक्षा को नहीं समझते। इशोपनिषद् आगे कहता है—

अविद्यां मृत्यु तीत्र्वा विद्ययाऽ मृत मश्नुतेः।

(अल्तेकर, 2014)

अर्थात् विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होगी। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए मदन मोहन मालवीय ने प्राचीन भारत के शिक्षा केंद्रों जैसे तक्षशिला एवं नालंदा के साथ ही वर्तमान पश्चिमी विश्वविद्यालयों के श्रेष्ठतम समायोजन की योजना बनायी। अतः इस सुंदर संयोग द्वारा उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय हेतु निम्नांकित ध्येयों को तय किया। इन्हें वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में भी देखा जा सकता है—

1. धर्म और नीति को शिक्षा का आवश्यक या अभिन्न अंग मानकर युवकों में सदाचार का संघटन या चरित्र निर्माण का विकास करना।
2. आवश्यक प्रयोगात्मक ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान, शिल्प, कला-कौशल तथा व्यवसाय संबंधी ऐसे ज्ञान की वृद्धि जिससे देशीय व्यवसाय तथा धंधों की उन्नति हो।
3. कला और विज्ञान की सर्वतोन्मुखी शिक्षा तथा अन्वेषण एवं नवाचार में वृद्धि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मदन मोहन मालवीय के अनुसार शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्यों के अंतर्गत व्यक्ति का शारीरिक एवं आध्यात्मिक/आत्मिक विकास कर उसके व्यक्तित्व के सभी पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित करना है। साथ ही शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों के अंतर्गत व्यक्ति के अंतर्गत एकता, देशभक्ति, आत्मत्याग एवं सेवाभाव उत्पन्न करना है। इन दोनों उद्देश्यों का बड़ा सुंदर प्रकटीकरण उनके स्वनिर्मित श्लोक द्वारा स्पष्ट होता है —

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथविद्यया।
देशभक्त्यात्मत्यागेन सम्मानर्हः सदा भव।।

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति और आत्मत्याग द्वारा सदा ही सम्मान पाने योग्य बनो।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

जहाँ तक पाठ्यक्रम का संबंध है, मदन मोहन मालवीय पाठ्यक्रम को विस्तृत बनाने के पक्ष में थे। वे देश के अभ्युदय के लिए विज्ञान के अध्ययन को आवश्यक समझते थे। विभिन्न उद्योगों, कलाओं की शिक्षा की व्यवस्था करना भी अपना दायित्व समझते थे। मदन मोहन मालवीय के पाठ्यक्रम की वृहद संकल्पना उनके द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय में देखने को मिलती है। समग्र रूप में कला, विज्ञान, व्यवसाय, धर्म और नीति, हिंदू-शास्त्र तथा संस्कृत भाषा के अध्ययन पर उन्होंने विशेष ज़ोर दिया है। परंतु सिद्धांत एवं व्यवहार के समन्वित स्वरूप के अध्ययन व अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पं. मदन मोहन एक महान भविष्यदृष्टा थे। उन्होंने भूत, वर्तमान एवं भविष्य का एक त्रिकालदर्शी के रूप में दर्शन किया था। मदन मोहन मालवीय का मानना था कि हमारी पैतृक संपत्तियों में से सबसे बहुमूल्य रत्न हमारी संस्कृत भाषा है। इस भाषा के अध्ययन से अदभुत मानसिक क्षमता प्राप्त होती है। विज्ञान ने भी इस बात को सिद्ध किया है कि अगर कोई विद्यार्थी संस्कृत शब्दों का उच्चारण ठीक प्रकार से कर लेता है तो वह दुनिया की कठिन से कठिनतम भाषा का उच्चारण आसानी से कर सकता है। अतः संस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। मदन मोहन मालवीय का मानना था कि अंग्रेज़ी के व्यापक प्रयोग से हमारी राष्ट्रीय भाषाएँ एकदम भुला दी गई हैं। अतएव हिंदी अथवा अन्य किसी भारतीय भाषा को अंग्रेज़ी का स्थान ग्रहण करने में कुछ अधिक समय लगेगा। इस प्रकार के परिवर्तन के लिए उन्होंने कुछ उपाय भी सुझाये थे। इन उपायों में पाठ्यपुस्तकों की रचना, अनुवाद करना, हिन्दी को पूरे देश की संपर्क भाषा के रूप में प्रतिस्थापित करना प्रमुख था।

सभी प्रमुख विषयों की शिक्षा के साथ ही साथ मदन मोहन मालवीय का यह भी मानना था कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण हेतु बहुविध प्रयास किए जाने चाहिए। मात्र शिक्षा की औपचारिक व्यवस्था पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिये। इस प्रकार मदन मोहन मालवीय न केवल औपचारिक पाठ्यक्रम के पक्षधर थे, अपितु वे अनौपचारिक पाठ्यक्रम/पाठ्यसहगामी क्रियाओं को भी पाठ्यक्रम का अंग मानते थे। मदन मोहन मालवीय विभिन्न प्रकार की गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों में भावात्मक परिवर्तन लाना चाहते थे। जैसे — धार्मिक विषयों पर

नियमानुकुल व्याख्यान का आयोजन, धर्म संबंधी कथाओं का पाठ, धार्मिक संभाषण आदि के द्वारा धार्मिक तथा आध्यात्मिक भावों का संचार किया जाए। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों की सामाजिक तथा साहित्यिक सभा, नाटक मंडली, खेल समिति, राज्य परिषद, युवा सांसदों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, तथा शिक्षा संबंधी विषयों पर बहस करायी जानी चाहिए। विद्यार्थियों के सुंदर चरित्र-निर्माण हेतु धार्मिक विषयों के साथ-साथ शारीरिक व्यायाम करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए कहा कि—

दूध पियो, कसरत करो, नित्य जपो हरिनाम।
हिम्मत से कारज करो, पूरेगे सब काम।

(मालवीय, 2012)

मदन मोहन मालवीय की पाठ्यक्रम योजना को आज कई शिक्षा संस्थाएँ प्रयोग में ला रही हैं।

शिक्षा का माध्यम

किसी भी देश की प्रगति में भाषा एवं आपसी संवाद के माध्यम का अहम योगदान होता है। मदन मोहन मालवीय भी इस बात को गंभीरता से लेते थे। मदन मोहन मालवीय के अनुसार भारतीय विद्यार्थियों के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों में सबसे बड़ी कठिनता शिक्षा का माध्यम निजभाषा न होकर एक अत्यंत दुरुह विदेशी भाषा का होना है। विद्यार्थी को शिक्षा प्रारंभ करने से लेकर विद्यालय छोड़ने तक उसके बहुमूल्य समय का अधिकांश हिस्सा एकमात्र शिक्षा माध्यम अंग्रेजी से परिचय प्राप्त करने में लग जाता है। उनके अनुसार इस बात का हिसाब लगाना बहुत कठिन है कि भारतीय जनता को इसके लिए बाध्य होकर किस परिणाम से अपना अमूल्य समय, परिश्रम तथा धन की तिलांजलि देनी पड़ती है। फिर भी मालवीय अंग्रेजी भाषा को महत्त्व देते थे, उनका कहना था कि हम भाषा कोई भी सीखें किंतु आधार अपनी मातृभाषा ही होनी चाहिए।

(तिवारी, 2004)

पं. मदन मोहन का कहना था कि भारत वर्ष की मातृभाषा हिंदी अथवा हिंदुस्तानी को अवश्य स्थापित करना पड़ेगा। हमारे विद्यार्थियों को किसी भी विषय में उतना अच्छा ज्ञान नहीं हो सकता जितना उसी विषय का अपनी मातृभाषा के द्वारा अध्ययन करके एक अंग्रेज़ विद्यार्थी प्राप्त कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा अपनी उत्तमता के उच्च शिखर पर तब तक नहीं पहुँच सकती जब तक जनता की मातृभाषा अपने उचित स्थान पर शिक्षा के माध्यम तथा सर्वसाधारण के व्यवहार के रूप में न स्थापित की जाए। मदन मोहन मालवीय की यह बात आज के परिवेश में पूर्णतः सही है। लगभग सभी विकसित राष्ट्र अपनी भाषा में शिक्षा देकर ही आगे बढ़ रहे हैं। भारत सरकार को भी इस पर गंभीरता से काम करना चाहिए। हिंदी को पूरे देश के राज-काज की भाषा, शिक्षा का माध्यम एवं आपसी संपर्क की भाषा के रूप में शीघ्रातिशीघ्र प्रतिष्ठित करना चाहिए।

शिक्षक

कोठारी आयोग का मानना है कि किसी भी राष्ट्र के शिक्षा का स्तर शिक्षकों के स्तर से ऊँचा नहीं हो सकता। मदन मोहन मालवीय को बहुत पहले ही इस बात का अहसास था। शिक्षकों के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय का कहना था कि वे सदाचारी रहेंगे, देश सेवा

के साथ-साथ सादगीपूर्ण एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करेंगे। प्राचीन गुरुकुलों की भाँति शिक्षक विद्यार्थियों के शारीरिक पोषण के साथ-साथ मानसिक पोषण एवं सदाचार शिक्षा देकर उनके जीवन को प्रकाशमय बनाएँ। वे सहिष्णुता, विषय का ज्ञान, राष्ट्रीयता की भावना एवं अपना सर्वस्व ज्ञान विद्यार्थी को अर्पित करने जैसे गुणों को आवश्यक मानते थे। वे समाज से शिक्षकों को सम्मान और आदर देने की अपील करते थे।

विद्यार्थी

मदन मोहन मालवीय चाहते थे कि सदाचारी, देश सेवा एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाले अध्यापकों की तरह हमारे छात्र और छात्राएँ अपना जीवन उज्ज्वल करने की प्रतिज्ञा करें। वे विद्यार्थियों से कहा करते थे कि उन्हें स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

विद्यार्थियों को अपने जीवन में आगे चलकर देश सेवा के लिए तैयार होना चाहिए। इस धारणा को उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की एक 'संसद' बनाकर उसमें विद्यार्थीगण किस प्रकार प्रधानमंत्री व मंत्री चुने इसका प्रावधान कर रखा था। इस प्रकार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को देश चलाने के लिए प्रशिक्षित कर देश के भावी कर्णाधार बनाकर, देश के भावी नेताओं को तैयार करने की भी योजना काशी हिंदू विश्वविद्यालय की होती थी (मालवीय, 2012)। मदन मोहन मालवीय ने विद्यार्थियों को सदैव अपना ध्यान सामाजिक कार्यों में लगाने को कहा है। ऐसे दौर में जब विद्यार्थियों में उच्छृंखलता एवं येन-केन प्रकारेण प्रसिद्धी पाने और धन कमाने की लालसा बलवती हो रही है, मदन मोहन मालवीय की उपरोक्त बातें अब और अधिक सार्थक प्रतीत हो रही हैं।

स्त्री शिक्षा एवं सशक्तिकरण

मदन मोहन मालवीय स्त्री शिक्षा को पुरुषों की शिक्षा से भी अधिक आवश्यक मानते थे। 16 मार्च 1911 को कौंसिल में गोखले द्वारा प्रस्तुत प्राथमिक शिक्षा विधेयक के समर्थन में बोलते हुए मदन मोहन मालवीय ने कहा था – "जो सिद्धांत लड़कों के लिए ठीक समझा जाता है, उसे उचित संरक्षण के साथ अभिभावकों की राय से लड़कियों पर भी लागू किया जाना चाहिए। समाज के आधे भाग को ज्ञान की ज्योति से तथा उस उत्कृष्ट जीवन से, जो ज्ञान द्वारा संभव है, वंचित रखना बहुत दुःखदायी बात है। लड़कों की तरह लड़कियों के लिए भी अनिवार्य शिक्षा के प्रबंध किये जाएँ" (तिवारी, 2016)। उन्होंने लिखा था "जातीय जीवन के पुनरुत्थान हेतु स्त्री शिक्षा के पवित्र कार्य को उत्साह के साथ किया जाए" (तिवारी, 2016)। उनका यह स्पष्ट मत था कि "पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे ही भारत की भावी संतानों की माता हैं। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वज्ञानियों, व्यापार तथा कला-कुशल के नेताओं आदि की प्रथम शिक्षिका हैं" (तिवारी, 2016)। पं. मदन मोहन ने स्त्री शिक्षा के उत्थान हेतु सन् 1905 में प्रयाग में एक 'गौरी पाठशाला' स्थापित की थी, जो आज इंटर कॉलेज के रूप में संचालित है। आगे 1924 में बी.एच.यू. में

महिला महाविद्यालय की स्थापना की, जिसमें आज देश-विदेश के हर कोने की कन्याएँ विद्यार्जन कर रही हैं। पं. मदन मोहन स्त्रियों के वेद पढ़ने के भी समर्थक थे (तिवारी, 2016)।

स्त्री सुरक्षा के सवाल पर उनका दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, विकास में स्त्रियों की भूमिका के प्रश्न पर उनका स्पष्ट मत था कि "ईश्वर की सृष्टि में मनुष्य में कोई भेद नहीं है। लोग पुरुष और स्त्री में मतभेद करते हैं, पर जहाँ तक ईश्वरीय ज्योति का प्रश्न है, दोनों में बिल्कुल भेद नहीं है। स्त्रियों को देश हित के लिए काम करना चाहिए, उन्हें भय छोड़ देना चाहिए। जब तक प्रगति के क्षेत्रों में वे आगे नहीं आतीं, तब तक देश के लिए उन्नति करना संभव नहीं है" (तिवारी, 2016)।

एक समान राष्ट्रीय शिक्षा नीति

मदन मोहन मालवीय सभी के लिए समान अवसर एवं सर्वांगीण विकास के लिए एकसमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रबल समर्थक थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बनाने के लिए मदन मोहन मालवीय ने संगोष्ठी, कार्यशाला एवं देश भर के विद्वानों को आपस में विमर्श की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया। मदन मोहन मालवीय अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा, स्त्रियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम एवं सार्वजनिक एवं जीविकोपार्जन सुनिश्चित कराने वाली शिक्षा के पक्षधर थे।

मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक प्रयोग के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

मदन मोहन मालवीय ने अपने उद्देश्यों को साकार रूप प्रदान करने के लिए एवं देश में शिक्षा का प्रसार करने के लिए काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। 4 फ़रवरी 1916 को 12 बजे वायसराय लार्ड हार्डिंग ने इस विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया।

मदन मोहन मालवीय स्वयं काशी हिंदू विश्वविद्यालय के 20 वर्षों तक कुलपति रहे। इसके बाद कुलपति के पद पर भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक और भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आसीन हुए। स्वतंत्रता के बाद कुछ वर्षों तक आचार्य नरेन्द्रदेव उपकुलपति रहे। इस विश्वविद्यालय का वर्तमान स्वरूप शनै: शनै: बदल रहा है। युग की धारा के अनुरूप बदलना चाहिए, किंतु मदन मोहन मालवीय के आदर्शों को इस विश्वविद्यालय में साकार रूप देने का यथासंभव प्रयत्न अभी भी हो रहा है। भारत रत्न मदन मोहन मालवीय का यह विश्वविद्यालय अब भी अपने मानव-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण के उद्देश्य के लिए स्थापित अपना कर्तव्य बखूबी निभा रहा है। किसी व्यक्ति अथवा संस्था के जीवन में 100 वर्षों की यात्रा कम नहीं होती। काशी हिंदू विश्वविद्यालय 100 वर्ष पूरे करने के उपरांत नई ज़िम्मेदारियों के साथ भारत–निर्माण के लिए तैयार है। उन्हें इस अद्वितीय योगदान के कारण ही पदमकांत मदन मोहन मालवीय ने उन्हें 'राष्ट्र गुरु' के पद से विभूषित किया है और भारत सरकार ने भारत रत्न उपाधि से नवाजा है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए कहा जाता है कि 'भारत के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के कई सारे प्रयास और मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय उनका यह कार्य ही अतुलनीय है।'

उपसंहार

एक ऐसे दौर में जब देश के अंदर और बाहर एक बहस शुरू हुई है कि भारत को अपने विकास और

समृद्धि के लिए महज नए उपभोक्तावादी लक्ष्यों को सामने रखना चाहिए या प्रेम, सहअस्तित्व और आध्यात्मिक ऊर्जा के उस आदर्श को सामने रखना चाहिए जो हमारी विरासत रही है। मौजूदा दौर युवा जुनून और उसकी ई-तकनीक और प्रबंधकारी मेधा का है। भारतीय युवाओं की उपलब्धियाँ वैश्विक सराही जा रही हैं, स्वीकारी जा रही हैं, बावजूद इसके देश के समय, समाज और परिवेश को बदलने में उनका कोई बड़ा अवदान सामने नहीं आ पा रहा। इसके विपरीत चिंता जतायी जा रही है कि देशकाल और समाज के मूल्यबोध को लेकर नई पीढ़ी खासी लापरवाह है। बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने तो यहाँ तक कहा था कि "वह संस्कृति और सभ्यता अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहता, जब वहाँ के नागरिकों में अपने संस्कृति के प्रति हीन भावना घर जाये" (पाण्डेय, 2012)।

ऐसे वक्त में मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक एवं सामाजिक चिंतन हमारा मार्गदर्शन करता है। आज के भारत की जो कठिनाइयाँ हैं उसकी परिकल्पना पं. मदन मोहन ने बहुत पहले ही कर ली थी। मूल्यों के संकट एवं आध्यात्मिक/सांस्कृतिक प्रतिमानों के संरक्षण के लिए ही पं. मदन मोहन ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की परिकल्पना की थी।

अगर हम विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और देश के जागरुक नागरिक मदन मोहन मालवीय की उपरोक्त पंक्तियों को आत्मसात् कर लें तो भारत के प्राचीन गौरव और विकसित भारत के निर्माण को कोई नहीं रोक सकता। मूल्य संकट के इस दौर में संयमित और अनुशासित नागरिक बनना भी गौरव की बात है। मदन मोहन मालवीय की शिक्षाओं और विश्वविद्यालय के ध्येय को हम अपने जीवन में उतारें और उन पर चलने का संकल्प लें यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। पं. मदन मोहन हमारे बीच नहीं हैं, परंतु महापुरुष अपने पीछे युग और स्मृतियों का कलेवर छोड़ जाता है। वह हमारी थाती होता है। इस थाती को हम संजोकर रखेंगे। पं. मदन मोहन की स्मृति और अवदान को हमारा कोटिशः प्रणाम, सहस्त्र बार प्रणाम।

संदर्भ

अल्तेकर, अनंत सदाशिव. 2014. *प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति*, अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, वाराणसी. पृ. 9–10.

तिवारी, उमेश दत्त. 2016. *महामना की आत्मकथा (व्यक्तिगत जीवन प्रसंग)*. महामना मालवीय फाउंडेशन, वाराणसी. पृ. 50–65.

——. 2004. *महामना के लेख*, महामना मालवीय फाउंडेशन, वाराणसी. पृ. 157–182.

पाण्डेय, रामशकल. 2012. *विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा. पृ. 260, 309–329

पाण्डेय, विश्वनाथ 2006. *काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक मदन मोहन मालवीय*, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी. पृ. 3–10.

मालवीय, पद्मकांत. 2000. *मालवीय जी के सपनों का भारत*, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी. पृ. 70–80.

मालवीय, गिरिधर. 2012. *महामना पं. मदन मोहन मालवीय जीवन परिचय*, काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्रकाशित, वाराणसी. पृ. 62–71.

वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद. 2014. *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन*, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा. पृ. 422–428.